International Journal of Applied Research 2019; 5(4): 525-527

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2019; 5(4): 525-527
www.allresearchjournal.com
Received: 18-02-2019
Accepted: 26-03-2019

प्रदीप कुमार
पूर्व गवेषक, विश्वविद्यालय मैथिली विभाग, ल. ना. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, भारत

Corresponding Author:
प्रदीप कुमार
पूर्व गवेषक, विश्वविद्यालय मैथिली विभाग, ल. ना. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, भारत

साहित्यकारक रूप मे यात्रीक समाजवादी चित्रण

प्रदीप कुमार

सारांशः
यात्रीजीक जातिगत पहिचानक अलावा एकटा आरोप ईहो रहल अछि जे मैथिली मे बहुत रास आक्रोपूर्ण बात कें सटीक रूपें अभिव्यक्त करबाक क्षमता नहि छै। कठोर बातक ओतबे कठोर प्रभाव, भाषाक मारक क्षमता, वैचारिक–दार्शनिक उत्तेजना आ गंभीरता कें बहुत प्रभावशाली आ बहुआयामी बनयबाक क्षमता तेहन सहज नहि छै। ई बात हाल–हाल धरि सत्ये जकाँ लगै छल। ओना यात्री, ललित, राजकमल, धूमकेतु, राज मोहन झा, कुलानंद मिश्र, अग्निपुष्प सन किछु रचनाकार बहुत हद धरि ओहि धारणा कें पहिनहि सँ तोड़बाक महत्त्वपूर्ण प्रयास कयलनि अछि। 'शिखा', 'सन्निपात' सँ 'आरंभ', 'अंतिका' धरि ओहि दिशा मे प्रयासरत किछु पत्रिको रहल अछि। मुदा एहि धारणा के 'मोड़ पर' बेसी प्रभावशाली ढंगें अछि। ई उपन्यास मैथिली मे एक टा तँ मैथिली साहित्यक पूरा परिदृश्य के बदलल जा सकैछ। मुदा एहि उपन्यास कें परखैक मानसिकता उपन्यास प्रकाशनक चारि वर्ष भ' गेलाक बादो नहि बनि सकल अछि। विडंबनाक बात जे मैथिली साहित्यक सर्वाधिक लोक एखन धरि एकरा पढ़बो नहि कयलनि। जे सभ पढ़लनि ओ पचा नहि सकलाह। ई बात पहिनहि साफ क' दी जे दक्षिण–पंक्षी–मनुवादी लोकनि के धूमकेतुक साहित्य नहि कहियो अरघलनि, ने अरघतनि। तें ओहन लोक सँ 'मोड़ पर' क महत्त्व बुझवाक अपेक्षे राखब बेकार हैत।

प्रस्तावनाः
वास्तव मे उपन्यास सन रचनाक पाछाँ सामाजिक स्थितिक बड़ पैघ भूमिका होइत अछि। लेखक जत' सँ ओकर गहन संपृक्ति रहैत छै, जत'क कथानक आ पात्र उठबैत अछि–ओहि सभ ठामक सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक स्थिति–परिस्थिति आ भ' रहल नव–नव परिवर्तनक प्रभाव किछु–ने–किछु उपन्यास पर पड़िते टा छै। एतबे नहि, ओत्तुका भूगोल, माटिपानिक गंध, पशु–पक्षी, सांस्कृतिक रीति–रिवाज, रहन–सहनक ढंग, इतिहास आ मिथकीय अवधारणा सेहो अनायास खुजैत भेटैत छै। एकरा सभक अभाव में छुच्छ भावनाक बलें सफल उपन्यासक कल्पने नहि कयल जा सकैछ। जें कि उपन्यास समाज, राजनीति, अर्थ, दर्शन आ इतिहास सँ पर्याप्त प्रभाव आ प्रेरणा ग्रहण करैत छै तें ओहि सभ शास्त्र कें सेहो प्रभावित करक क्षमता रखैत अछि। प्रायः एही कारणें पाठके कें सर्वाधिक प्रभावित करक क्षमता उपन्यासे रखैत अछि। शर्त एतबे जे उपन्यासकार सेहो एहि सभ बात कें ध्यान मे रखैत अपन ओरियाओन मे कोनो कमी नहि रखने होथि। काफ्का पर विचार करैत जार्ज लूकाच लिखै छथि लिखै छथि, ''एक लेखक ऐतिहासिक प्रक्रियाक विशेष दौरक बाद करे राजनीतिक आ सामाजिक विकासक सचेत पूर्वानुमानक बिना सेहो मनुक्खक साँच समस्या सभ (आ एहि तरह सुच्चा–सुच्चा सामाजिक समस्या सभ) कें पकड़ि सकैत अछि। मुदा एत' फेर परिप्रेक्ष्यक सवाल प्रासंगिक अछि। एक टा प्रातिनिधिकता तखने स्थायी महत्त्वक भ' सकैत अछि जखन लेखक अपन प्रातिनिधिक सभक केंद्रीय आ कात–करोटक, त्रासद आ कामद विशेषता सभक चित्रण एहि रूप मे कथने हो जे बादक विकास ओकरा द्वारा कयल कालक चित्रण के उचित ठहराब।''[1] एहि सभ बात कें जरूर लगैत अछि, मुदा 'सब घर सूना' वला बात नहि छै। निश्चित रूपें कम संख्या मे सही, मुदा किछु एहन उपन्यास अछि जाहि पर विचार कयल जा सकैछ। आब तँ एक टा इहनो उपन्यास ('मोड़ पर') आबि गेल अछि, जाहि पर आनो–आन भाषा–भाषीक बीच माथ उठाक' बात क' सकै छी। मुदा मैथिली साहित्यक बनल–बनाओल पहिचान कें टुटबा मे समय तँ लगबे करता।[2]
सर्वप्रथम हेनरी फील्डिंगक कथन मोन पडैत अछि, 'उपन्यास गद्य मे लिखल सामान्य लोकक महाकाव्य थिक।' फेर बाल्जाक जे उपन्यास कें 'मानवीय कॉमेडी' मानैत छलाह। रचनाक भतर जन–सामान्य लोकक सुख–दुख, इच्छा–आकांक्षा, समस्त सुन्दरता आ कुरूपताक संग विस्तार सँ, उपन्यासे मे संभव भेल। महाकाव्य मे तँ देवता, शूर–वीर आ राजवंशेक गाथा होइत छल। तें उपन्यास सँ साहित्य मे एक टा क्रांतिकारी परिवर्तन कें रेखांकित कयल गेल। बाल्जाक सँ तोल्सतोय धरि अबैत–अबैत उपन्यासक मार्ग खूब प्रशस्त भ' गेल छल।

मार्क्स सँ जार्ज लूकाच धरि उपन्यास–आलोचनामे विशेष रुचि लेलनि आ एहि विधा के प्रोत्साहित कयलनि, तँ निश्चित रूप एकर महत्त्व हुनका नजरि मे रहल हैतनि। ओत' 'कलात्मक वस्तुपरकता' ओही समय अपर्याप्त मानल जाय लागल छल। उपन्यास मे 'कलात्मक वस्तुपरकता' केर संगहि 'ऐतिहासिक प्रक्रिया' आ 'सामाजिक विकास' के ओकर गत्यात्मकताक संग रेखांकित करब जरूरी बुझल जाय लागल छल। प्रायः तें दुनिया भरि मे उपन्यास के प्रातिनिधिक विधा मानल जायबाक संगहि उपन्यासे सँ ओहि भाषाक आधुनिक साहित्यिक पहिचान निर्धारित होब' लागल।(3)

मुदा अपना देश मे तँ हिन्दी उपन्यास पर्यन्त तहिया स्त्रीगण लेल शुचिता, मर्यादा आदिक आचार–संहिता लिखबाक पूर्वाभ्यासे क' रहल छल। आइ। उपन्यासक इतिहास लगभग तीन सय सालक अछि। मुदा भारत मे हिंदी, बांग्ला, मराठी, तमिल, मलयालम आदि मे सँ ककरो लग अपन मौलिक उपन्यासक डेढ़ो सय सालक इतिहास नहि छै। हँ, ओहि भाषा सभक उपन्यास–साहित्य आइ एतेक समृद्ध जरूर भ' गेल अछि जे ओकर राष्ट्र–व्यापी पहिचान सगरो बनि रहल छै। जखन कि मैथिली उपन्यासक इतिहास पूरापूरी सयो सालक नहि अछि। दस वर्ष बाद 'निर्दयी सासु' (जनार्दन झा 'जनसीदन')क प्रकाशनक शताब्दी वर्ष हैत। नब्बे वर्षक एहू औपन्यासिक–यात्रा मे कहबा लेल नब्बे सँ बेसी उपन्यास प्रकाशित भेल अछि। मुदा स्थिति ई अछि जे एहि सभ मे सँ पन्द्रह–सोलह टा कें छोड़ि बेसी उपनस अपन कोनो टा महत्त्व सिद्ध करैत चर्चाक अधिकार नहि रखैत अछि। आँगुर पर गनि लिअ– 'कन्यादान', 'द्विरागमन', 'अगिलही', 'भलमानुस', 'पारो', 'नवतुरिया', 'मधुश्रावणी', 'पृथ्वीपुत्र', 'भोरूकबा', 'दू–पत्र', 'पहिल लोक', 'नैका बनिजारा', 'मरीचिका', 'मोड़ पर', 'सर्वस्वांत'। घीचि–तीरि क', रेड–राडिक 'दू–चारि टाक नाम आरो गाने लिय'। मुदा ओकरा भीतर जा पड़ताल करू तें समय–समय पर नव परिवर्तनकारी मोड़ आनश्वला टिकाऊ उपन्यास तीन–चारिक संख्या धरि सीमित भ' जायत। जेना पहिल भावुकतावला दौर मे 'पारो' समान अंतः सूत्र (शरतचंद्रीय भावुकता) में गँथायल रहलाक बादो पारो सन चरित्र आ भाषाक बलें एहन ठाकर दैत छैक जाहि सँ आगूक लेखन–धारा प्रभावित होइत छ। फेर 'नवतुरिया' मे जे युवाजनक आक्रोशक बीजारोपण भेल तकर पौध 'पृथ्वीपुत्र' मे भेटल। 'पृथ्वीपुत्र' सरिपहु मैथिलीक पहिल एहन उपन्यास थिक जाहि मे निम्नवर्गीय कृषक समाज, कृषि मजदूर, भूमि–संघर्ष लेखकीय कुशलता आ दक्षताक परिचय दैत सोझाँ आयल। हँ, ओकर क्षीण काया जहिना अखरैत अछि तहिना ऐतिहासिक–राजनीतिक प्रक्रिया सँ कांछी काटब सेहो। मात्र सामाजिक प्रक्रिया एत' उपन्यास के महत्त्वपूर्ण बनयबाक अतिरिक्त क्षमता देखबैत अछि। मुदा मैथिली उपन्यासक तेसर जे महत्त्वपूर्ण मोड़ अकैत छै 'मोड़ पर' सँ, ओहि मे सामाजिक प्रक्रियाक संगहि ऐतिहासिक आ राजनीतिक प्रक्रिया कें सेहो ओकर गत्यात्मकताक संग संपूर्ण लेखकीय कुशलता आ दक्षता सँ दर्शाओल गेल अछि। 'मोड़ पर' वला ई मोड़ निश्चित रूप मैथिली। उपन्यासक सभ सँ महत्त्वपूर्ण आ ऐतिहासिक परिघटना थिका।(4)

'मोड़ पर' सामाजिक–राजनीतिक उपन्यास हैबाक संगहि एक टा पैघ ऐतिहासिक काल–खंड आ परिप्रेक्ष्य कें अपना मे समेटने अछि। 1942 कें आन्दोलनक लहरि व्याप्त छै। रेलवे लाइन उखाड़ब, तोड़–फोड़ आ जन विद्रोहक। देशव्यापी माहौल छै। खादी आ गाँधी छै। मुदा गाँधीवादी गुट सँ अलग समाजवादी आन्दोलन मे सेहो मिथिलाक योगदान रहल छलै, तकर पर्याप्त सबूत एत' भेटै छ। शहीदे आजम भगतसिंहक प्रभाव सेहो छ। वामपंथी राजनीतिक चेतनाक असरि शोषित–पीड़ित जनता मे भ' रहल छलै आ एकटा परिवर्तनकारी चेतना चारू तरफ अपन गतिविधिक प्रभाव छोड़' लागल छलै। ओहि क्रांतिकारी सभ पर अंग्रेजी शासनक पहरुआ सभक संगहि सामंत–जमींदार आ देशी चाटुकारक जे एक टा वर्ग मिलल छलै, ओ सभ जानलेबा हमला निरंतर कर' लगलै। स्थिति एते खराब भ' गेले जे एहू क्रांतिकारी सभ कें सशस्त्र संघर्ष पर उतर' पड़लै। ओ सशस्त्र संघर्ष छद्मपूर्ण आजादी (''चालीस कोटि भारतीय कें जे स्वाधीनता भेटबाक छलै से चालीस गोटे के भेटलै'') भेटलाक बाद देसी–दुश्मन सँ लड़बाक लेल किएक पुनः जरूरी भ' गेल–नक्सलवाड़ी आन्दोलन, बांग्लाक परिदृश्य, विभिन्न स्तर पर भ' रहल सरकारी प्रयास सँ जनसंहार, सत्ता–सामंतक चरित्र–एहि सभ पर पर्याप्त बात–विचार कथाक संग–संग खजलैत अछि। कथाक खुजबाक ई प्रक्रिया ततेक सहज अछि जे सामाजिक, राजनीतिक आ ऐतिहासिक प्रक्रिया सेहो सहज गति मे आगाँ बढेत जीवन–प्रवाह मे शामिल बुझाइत अछि। जीवन–प्रसंग, पाठ–रुची आदि कें जाबत ध्यान मे नहि राखल जायत, पाठकीय उत्सुकता का प्रभाव नहि बनत, तँ कृति अपन बात बुझाओत कोना?

उपन्यासक आरंभ जेलक भीतर स्वप्न–प्रसंग सँहोइ छै। सदाशिव झाक जेल सँ मुक्तिक दिन आबि गेल छै। ओना जेले मे ओकरा अध्यापनक 'अवसर' सेहो भेटि गेल छै। एत' देखबाक रहै छै जे ओ कोम्हार जाइत अछि। पहिले पाँती अछि, ''चारूकात उधियाइत कुहेस पसरल रहैक।''(5) ई कुहेस जनताक नजरिक सोझाँ व्यवस्था द्वारा पसारल गेल अछि। जे पूरा देशे कें जेल बना देबा पर तुलल अछि। सफेद झक जन–कल्याणक बीस–सूत्री कार्यक्रमक आवरणक चलते ''झक इजोरिया मे पसरल एक टा धुंध'' जकाँ लोकक नजरि पर पड़ल छै। ''जखनि जेले सँ मैट्रिक आ आइ. ए. केलनि, फेर जेलेक स्कूल मे शिक्षक भेला। जेलर साहेबक अइ बात मे जरूर ओजन छनि जे जेल त' तोरा छोडै छ,' तोरा नै के छोड़' क चाहिय'। ''ई थिक जेल सदृश बनल चहुदिसक परिस्थिति मे लाक कें ओझराक', फुसियाक', आन्हर बनाक' रखबाक सुविधा–व्यवस्था। मुदा सदाक आत्मचेतना संघर्षक ताप पर तपल–तपायल छ, ''सभ सँ महत्त्व साधन भेल जीवन आ तकर उपयोग अइ स्कूल मे मास्टरी क' क' कएल जाय?'' आ तें जेलरक ई कहब जे ''लागल नौकरीक उपेक्षा कोनो स्थिति मे उचित नै थिक'', क बादो ओ अपन विवेक आ सोच कें महत्त्व दैत अछि आ अपन निर्णय पर डटल रहैत सोचै अछि, ''आब कामरेडो खुश भ' जेता। नौकरीक बात सुनिक' ओहो बड़ निराश भेल छला।''(6)

सदाशिव झाक पतिमह मुरलीधर झा छलाह श्रीकांत झा लौकिक लोक। हुनक सात टा विवाह छलनि। सदाक पितामही कन्यादानी। एहि पितामही मे एकसरे लालबच्चा आ बहिन दाइजी। सदाक पिता यशोधर झा जे ''मुनुक्खक सभ स' पैघ गुण जाति–पाँजि कें मानथिल'' आ ड्यौढ़ीक' सेवा मे लागल रहथि, ओ मातृके रहलाह। यशोधर झाक नाना बड़ कलामी लोक। हिनका लोकनिक बाल्यकाल नानाक हवेलिए मे बितलनि। मुदा ड्योढ़ीक अपार धन–वैभवक एक मात्र उत्तराधिकारी लालबच्चा यशोधर झा सँ छोट होइतो आदेश देबाक अधिकार रखै छला। दाइजी कनेदानी छलि जकर घरवला कतौ भागि–पड़ाय गेल छलै। परित्यक्ता दाइजी ड्योढ़िए मे अनेक गंजन सहैत मुइली, बेसी ठीक ई कहब हैत जे मारल गेली। दाइजीक एक मात्र बेटी गूना उपन्यासक केन्द्रीय नारी पात्र थिकी। ओना दाइजी, सदाक नेनपने मे मारल गोलि (शोनितक पमार मे डूबल एक टा नारी देह) माय, सदाक छोटकी सतमाय (मसोमात)–ई तीनू सेहो उपन्यासक केन्द्रीय स्त्री–पात्र थिकी जे सहजे मिथिलाक कुलीन समाज सँ बहरायल शोषित–पीड़ित स्त्रीगणक प्रतिनिधित्व करैत छथि।(7)

हवेलीक चित्रण एत' शासनानुकूल व्यवस्थाक पक्षधर सामंत–जमीदार कें नाँ तँ कोनो रोमान छै, ने ललितक कलपू मिसर वला भावुकता। लालबच्चा अंग्रेजपरस्त छै। ''जिला बोर्ड मे कांग्रेसी प्रत्याशीक विरुद्ध चुनाव जीतने छला'', मुदा चुस्त चलाक तेहन जे जन–प्रतिरोध सँ बचक लेल ''सर्वाग खादी लगाक' कॉंग्रेसी बनि गेला।'' रईसी हुनक तेहन जे कलकत्ता–दार्जिलिंग

घुमथि आ बनारसक सिधेसरी बाइक पाछाँ हनुमानबाग बेच' पर उतरल रहथि। घरक फिकिर नहि छलनि। लेखकक शब्द मे, ष्हमरा आइ आश्चर्य होइए जे ड्योढ़ीक फिकिर के करैत छलैक। सभत' अपने समस्या मे ओझरायल मोन पडैत अछि। होइए जे एक टा व्यवस्था छलैक, बहुत सामयिक, बहुत ठोस। प्रायः ओही बदौलति गुड़कल चल जाइत छलैक। हँ, गुड़कान मे झहरैत, टुटैत–खियाइत। दलान पर दुबरी मिसर कार्यकारी मालिक, आड़न मे बढ़निआ माए। जहाँ तक हमरा मोन पडैत अछि, ड्यौढ़ीक धीयो–पुताक प्रतिपाल के करैक, से बूझब कठिन। सभ अपना भरोसे। जकर पयर जेम्हर बढ़ल जाइक। ई छलैक ड्योढ़ीक आलम।'' जेना आइ अपना देशक अछि व्यवस्था! ककरा छै आमजन आ समाजक चिंता?(8)

एहना ठाम उपेक्षित–अबडेरल सन सदाक शुरुआती जीवन–जकर निर्माणक पाछाँक बाल मनोविज्ञान सेहो ताकि सकै छी–एक बेर तँ कने–कने 'अगुरवान' क नायक जकाँ प्रतीत होइ छल। खास क' नेनपनक निडर कठमस्त–अल्हड़ जीवन, कचरी–केरा सन वस्तुक चोरि,, 'जी.टी.एल.पी.' आ शफिकिर नॉट' वला जुमलाक संगहि सतमाय कें हवेली मे काज करै सँ बरजैक प्रसंग। मुदा नहि, सदा स्कूल सेहो जा रहल छल। ओकर सक्रियता सामाजिक– राजनीतिक गतिविधि दिस सेहो होइ छै। साम्प्रायिक तनाव दूर करबाक दिशा मे, भ्रम आ अफवाह कें पसर' सँ रोकैत क्षेत्रक रिपोर्टिंग कर' वला काज सेहो करैत अछि ओ। ओकर बुद्धि–विवेक जाग्रत छै आ नजरि साफ। आरो बेसी जनबाक उत्सूकता, किछु करबाक उत्साह आ आवेग सेहो छै। ईहो सत्य जे तकर व्यवहार मे उग्रगत दोष देखाइ छै, मुदा ओकर डेग क्रांतिकारी छै। ओकर अगुआक ग्रुप जन क्रांति लेल प्रतिबद्ध अछि।

निष्कर्षः

सवाल मनुक्खक छैक। सवाल दलितक छैक।.... सवाल स्त्रीक अधिकारक छैक, सवाल जोन–बोनिहारिक छैक। अइ मे स' ककरो मुक्ति कानून स' संभव नै थिक।... मनुक्खक मुक्ति मनुख कें जगला स हएत। माने एकटा पैघ परिवर्तनक दरकार चारू तरफ छै। सदाक भीतर मे बहुत रास बात उमड़ि–घुमड़ि जनसामान्यक चिंताक रूप मे एकत्रित–घनीभूत भ' क' एहि जरूरति कें तीव्रता सँ महसूस करबा रहल छै। स्मरण करी, शुरुए से सदा जेलर कें कहै छै, जीवन ककरा कहै छै सर, हम नै जनै छी। एखनि तक हम जीबे ने केलौहें। सैह जीब' चाहैत छी। बना कोनो निश्चित कादर्श कें बिना कोनो बनाओल रास्ता कें। माने एक टा स्वतंत्र, निष्कलुष जीवन पद्धतिक कामना छै एत। मुदा से एहि व्यवस्था मे कोना संभव हैत?

संदर्भ संकेतः

1. आचार्य सुरेन्द्र झा सुमनक गद्य–गरिमा, डा. सावित्री झा, मिथिला रिसर्च सोसाइटी, कबिलपुर, लहेरियासराय, दरभंगा, 2008, पृ. 11–12
2. वैह, पृ. 96
3. वैह, पृ. 97
4. वैह, पृ. 99
5. एकल पाठ–हिमकर प्रकाशन–1999, पृ.–69
6. आधुनिक साहित्यक परिदृश्य–देवशंकर नवीन, अंतिका प्रकाशन, दिल्ली, पृ. 10
7. हिंदी साहित्य कोश, ज्ञानमंडल, लिमिटेड, वाराणसी. पृ. 17
8. पारो, यात्री समग्र, राजकमल प्रकाशन, 2003, पृष्ठ, 14